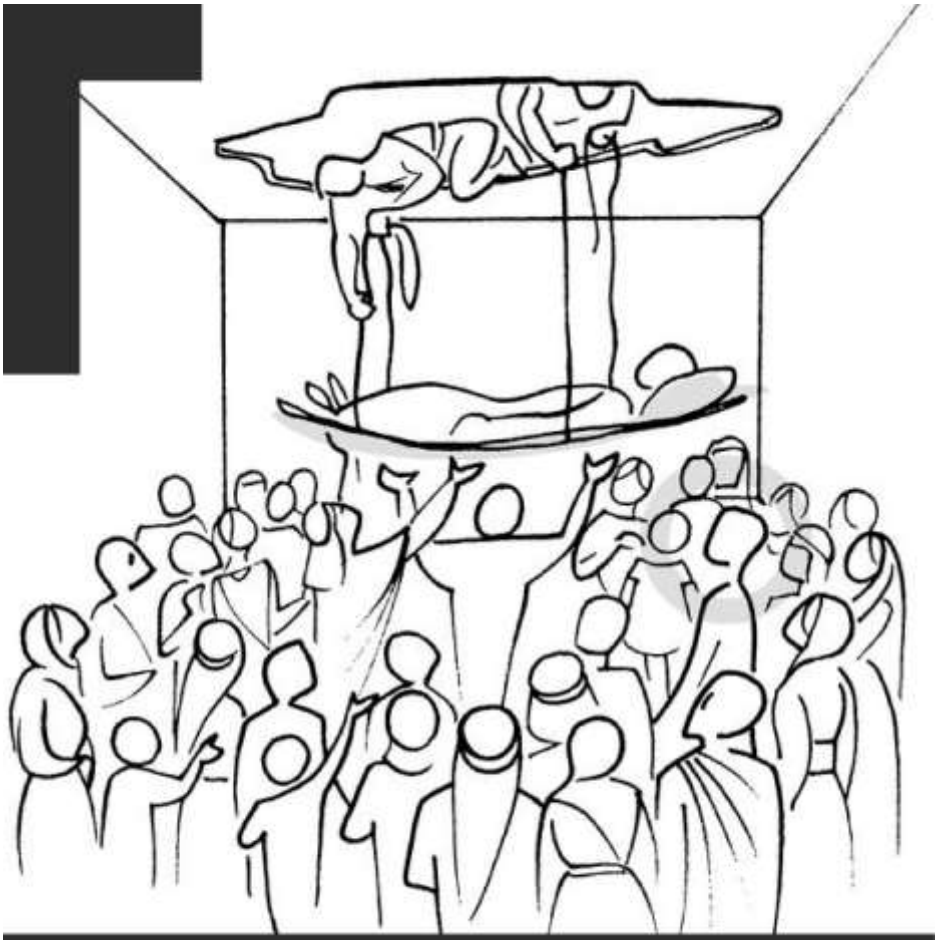

धर्मी जन

धर्मी जन

दिन 1: धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा

"मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उनसे प्रसन्न न होगा" इब्रानियों **10:38**

वो जो धर्मी हैं, उनके जीवन का सिध्दान्त है विश्वास, न कि घमण्ड जो सिर्फ स्वार्थ से भरा है। सच्चा विश्वास स्वार्थ से परे प्रभु परमेश्वर की ओर ताकता रहता है, जबकि घमण्ड केवल अपने बारे में सोचता है।

हमें सिर्फ विश्वास में जीने का आव्हान दिया गया है; न कि किसी और चीज़ के द्वारा। कुछ मसीही भक्ति से, कुछ कामों के द्वारा, कुछ भावनाओं में और कुछ परिस्थितियों के अनुसार जीवन बिताते हैं। यह सभी बातें अर्थहीन हैं और बिना विश्वास के शायद खतरनाक भी। यदि हम पीछे हटते हैं तो परमेश्वर प्रसन्न नहीं होते।

उपयोग:
इब्रानियों अध्याय **11** पढ़ो और उसपर मनन करो।

दिन 2: धर्मी जन खजूर की नाईं फूले फलेंगे

"धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे।" भजन संहिता **92:12**

दुष्ट के पास फूलने फलने का अपना एक समय/मौसम है, परन्तु धर्मी हमेशा सदाबहार खजूर के पेड़ की नाईं फूले फलेगा। दुष्ट को यह समझना आवश्यक है कि यह संसार उन्हें ऐसी उत्तम वस्तुएं देगा जिसका अनुभव भी उन्होंने शायद ही कभी किया हो, और धर्मी यह जानना आवश्यक है कि संसार में उन्हें अत्यन्त बुरा अनुभव प्राप्त होगा।

जब हम यह देखते हैं कि, खजूर का वृक्ष एक कुलीन स्तंभ की तरह अपनी सारी शक्ति एक मजबूत तने के द्वारा ऊपर की ओर भेज रहा है, और रेगिस्तान में नमी के अभाव और सूखे के बीच बढ़ रहा है, तो यह हमें एक धर्मी व्यक्ति की खूबसूरत तस्वीर दिखाता है, जो अपने सीधेपन में अकेले ही परमेश्वर की महिमा करने का लक्ष्य रखता है; और बाहरी परिस्थितियों से स्वतंत्र, ईश्वरीय अनुग्रह से ऐसा बनाया गया है कि जहां और सभी नष्ट होते हैं वहीं वह फलता फूलता है।

लबानोन के देवदार के वृक्ष उनके आकार, ताकत, टिकाऊपन्न, खूबसूरती और उपयोगिता के लिये जाने जाते हैं। धर्मी जन पर आने वाले आशीषें भी ऐसे ही गुणों से भरपूर होते हैं।

उपयोग:
आपके जीवन की कुछ अत्यंत बुरी परिस्थितियाँ जिनका सामना आपने किया उनके बारे में सोचो; और आपकी धार्मिकता के कारण परमेश्वर ने आपको जो आशिषें दीं उनके लिए परमेश्वर की प्रशंसा करो।

दिन 3: धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे

"तो भी धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े, और शुद्ध काम करनेवाले सामर्थ्य पर सामर्थ्य पाते जाएंगे।" अय्यूब **17:9**

इस वचन में अय्यूब ने धर्मी जन के विजय की घाषणा करते हुए एक ज़ोरदार निर्णायक मुद्दा जोड़ा है। अपने संकट के समय में भी, उसके पास विश्वास की चमक थी जिसने उसकी दु:ख भरी रात में ऊजाला कर दिया।

यह विजय धीरज के कारण मिलती है, जैसे धर्मी जन अपना मार्ग पकड़ा रहेगा। जैसे अय्यूब अत्यंत कष्टदायक और लम्बे समय से अपने दु:खों में धीरजवन्त रहा, तो वो स्वयं ही इस जीत का अनुभव भी लेगा।

जैसे वह जो पाप–रहित है वह दिन–प्रतिदिन सामर्थी होता जाता है, उसी प्रकार यह जीत भी प्रगति करती जाती है। पलक झपकते ही अय्यूब की परिस्थिती नहीं सुधरी। उसके जीवन में प्रेरणा और स्पष्टता की लौ चमक रही थी, लेकिन कुल मिलाकर परमेश्वर ने उसे संकट के लम्बे अनुभव से गुजारा।

उपयोग:
आपके अनुसार एक धार्मिक व्यक्ति के पास वो कौनसे मुख्य संकल्प होने चाहिये? उनकी सूचि बनाकर उनके द्वारा प्रार्थना करो ताकि परमेश्वर सामर्थ के साथ आपकी अगुवाई कर सकें।

दिन 4: धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे

"धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद देते हैं, परन्तु दुष्टों का नाम मिट जाता है।" नीतिवचन **10:7**

जहां तक इस संसार का प्रश्न है, हम में से कोई भी मनुष्य यहां नहीं रहेगा हम सिर्फ एक याद बनकर रह जाएंगे। हर व्यक्ति अपने पीछे इस संसार में अपनी कुछ यादें छोड़ जाता है; और उसकी यादें पूरी तरह से उसके चालचलन पर निर्भर होती हैं, जिस तरह का जीवन वो व्यतीत करता है उस प्रकार की उसकी यादें होती हैं। कुछ यादें होती हैं जो सड़न पैदा करती है; कुछ जो उनके सहारे जीते हैं, और उनमें आनन्दित होते हैं।

जीवन चाहे कितना भी छोटा हो, लेकिन वो काफी होता है इस संसार में कुछ करके उसकी ऐसी यादें छोड़ जाने के लिये ये, जो उनके जाने के बाद दूसरों के लिये एक आशिष ठहरे। प्रत्येक स्त्री पुरूष इस बात का चुनाव कर सकते हैं कि उनकी यादें शर्मनाक होंगी या प्रशंसनीय।

उपयोग:
आपको क्या लगता है आपके बारे में लोग कैसी बातें करेंगे? आपकी यादें दूसरों के लिये आशिष ठहरें इसके लिये आपको किन बातों में बदलना होगा? उन बातों के लिये प्रार्थना करो।

दिन 5: धर्मी सदा अटल रहेगा

"धर्मी सदा अटल रहेगा, परन्तु दुष्ट पृथ्वी पर बसने न पाएंगे।"
***नीतिवचन* 10:30**

परमेश्वर के धर्मी लोगों के लिये एक आश्चर्यजनक भविष्य है, जो सुरक्षित और अटल है। हम चारों ओर से दुःख तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते। निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते। गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।(2कुरून्थियों 4:8-9)।

धर्मी को कभी भी परमेश्वर के प्रेम से, यीशु के हाथों से और परमेश्वर के परिवार से अलग नहीं किया जाएगा। कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या कष्ट? संकट? उपद्रव? अकाल? गरीबी? जोखिम? या तलवार?(रोमियों 8:35)

उपयोग:
आपके जीवन की हरएक कठिनाईयों/सतावों के लिये प्रार्थना करो।

दिन 6: प्रभू की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं

"क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी प्रार्थना की ओर लगे रहते हैं परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।" **1 पतरस 3:12**

धर्मी जन हमेशा ईश्वर का ध्यान अपनी ओर खींचता है, और वो जहां भी हो, परमेश्वर के कान उसकी ओर लगे रहते हैं; क्योंकि हर एक धर्मी व्यक्ति प्रार्थना में लगा रहता है, वो जहां भी प्रार्थना करता है, परमेश्वर के कान उसकी प्रार्थना पर लगे रहते हैं, और जैसे ही वो प्रार्थना करता है, उसकी प्रार्थना परमेश्वर के कानों में पड़ती है।

वह निरन्तर परमेश्वर की नज़रों में और उनकी देखभाल में रहता है; परमेश्वर निरन्तर उसपर नज़र रखते हैं, और उसका ध्यान रखते हैं, और वो हमेशा परमेश्वर की सुरक्षा में रहता है।

देख प्रभु की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि दिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए।(2इतिहास 16:9)

उपयोग:
आपका ध्यान रखने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो। आपके जिन प्रार्थनाओं का उत्तर परमेश्वर ने दिया है उनको याद करो और परमेश्वर का धन्यावाद करो।

दिन 7: धर्मी जन की प्रार्थना सामर्थपूर्ण और प्रभावशाली होती है।

"इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को स्वीकार करो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिस से तुम स्वस्थ हो जाओ। धर्मी जन की प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है।" ***याकूब* 5:16**

जब परमेश्वर अपनी कलीसिया में कुछ विशेष कार्य करने का विचार करते हैं, तो अपने भक्तों पर अनुग्रह की आत्मा और बिनती उंडेलते हैं; और यह वो तब करते हैं जब किसी एक व्यक्ति के निजी जीवन में वे कुछ विशेष कार्य करना चाहते हैं।

जब इस प्रकार की प्रभावी प्रार्थना प्रदान की जाती है, तो शीघ्र ही विश्वास को कार्य में लाना चाहिये, ताकि आशिष प्राप्त हो सके; प्रार्थना की आत्मा इस बात का सबूत है कि चंगाई देने के लिये परमेश्वर उपस्थित हैं। लम्बी–लम्बी प्रार्थनाओं में ईश्वरीय प्रेरणा का कोई विशेष सबूत नहीं मिलता।

उपयोग:
किसी के साथ अपना जीवन साझा करो और उनके साथ मिलकर प्रार्थना करो।

दिन 8: धर्मी जन उठा लिया जाता है ताकि आपत्ति से बच जाए।

***"धर्मी जन नाश होता है, और कोई इस बात की चिन्ता नहीं करता; भक्त मनुष्य उठा लिये जाते हैं, परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन इसलिये उठा लिया जाता है कि आनेवाली आपत्ति से बच जाए।" यशायाह* 57:1**

इससे पहले वाले अध्याय में यहूदा के अगुवों को डांट लगाने के बाद, प्रभु इस अध्याय में धर्मी के सताव के बारे में बात करते हैं। हालांकि धर्मी लोगों को यहूदा के दुष्ट अगुवों ने अनदेखा किया और उनको सताया, परन्तु परमेश्वर उन्हें नहीं छोड़ेंगे। जब वे नाश हुए, जब भक्त लोग उठा लिये गए, परमेश्वर ने इसका उपयोग धर्मियों को आशिष देने में किया, ताकि उन्हें दुष्टता से बचाकर शान्ति में प्रवेश कराएं।

भक्तों को आराम और शान्ति मिली, और दुष्ट बन्दि बनाए गए, और उनमें से कुछ को मार डाला गया। **प्रभु** के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है। (भजन संहिता 116:15)।

उपयोग:
अपने प्रार्थना समय में उन लोगों को याद करो जो धार्मिकता के कारण सताए और मार डाले गए।

दिन 9: धर्मी जन पर बहुत सी विपत्तियां पड़ सकती हैं।

***"धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु प्रभु उसको उन सब से मुक्त करता है।" भजन संहिता* 34:19**

विश्वास और आज्ञाकारिता का जीवन परमेश्वर के बच्चे को विपत्तियों से मुक्त नहीं करेगा। यदि हम परमेश्वर पर विश्वास रखते और मदद के लिये उसे पुकारते हैं, तो परमेश्वर हमें हमारी विपत्तियों से बचाकर उन्हें हमारे लिये आशिष में बदल सकता है।

जब हमारा मन टूटा हुआ और हमारी आत्मा रौंदी हुई हो, तब हम चाहे इसे महसूस करें या न करें, परन्तु आश्वासन यह है कि, परमेश्वर हमारे पास होते हैं। यह शर्तों के साथ जुड़ी एक प्रतिज्ञा नहीं परन्तु सच्चाई है। धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।(मत्ती 5:10)।

उपयोग:
आज आपके मन को कौनसी परेशानी सता रही है? उन विपत्तियों के बारे में आप क्या चाहते हैं कि परमेश्वर क्या करें? एक ऐसे मन के लिये प्रार्थना करो जो परमेश्वर की इच्छा के अधिन रहे।

दिन 10: धर्मी के घर में बहुत धन रहता है।

"धर्मी के घर में बहुत धन रहता है, परन्तु दुष्ट के उपार्जन में दुःख रहता है।" नीतिवचन **15:6**

धर्मी के घर का धन केवल सांसारिक धन नहीं होता; सबसे बड़ा धन होता है धार्मिकता। हर एक धर्मी जन, चाहे उसके पास इस संसार का धन थोड़ा हो या बहुत; वह धनवान व्यक्ति है।

एक दुष्ट स्त्री या पुरूष जो भी कमाते हैं उसमें भी समस्याएं हो सकती हैं। धन के बजाए उनके पास परेशानियां होती हैं। हालांकि वह अत्यंन्त धनी हो सकता है फिर भी उसे सम्भालने में बड़ी दिक्कतें होती हैं।

उपयोगः
आपकी नज़र किस प्रकार के खजाने पर है? कुछ ऐसे आत्मिक खजानों की सूचि बनाओ जो आप पाना चाहते हैं, और उसे पाने के लिये आप क्या–क्या करेंगे?

दिन 11: धर्मी पुरूष का मन निर्धनों के न्याय पर लगा रहता है।

"धर्मी पुरूष कंगालों के मुकद्दमें में मन लगाता है; परन्तु दुष्ट जन उसे जानने की समझ नहीं रखता।" नीतिवचन **29:7**

धर्मी स्त्री–पुरूष की एक पहचान है कि वो गरीबों का ध्यान रखते हैं। यह तरस खाने से कहीं बढ़कर है; वह उसकी गरीबी के कारण पर विचार करता है। यहां विचारपूर्ण दया सक्रीय है।

वो जो दुष्ट हैं, परमेश्वर और उनके बुद्धिमानी का विरोध करते हैं, वो इस प्रकार की दया को समझ भी नहीं पाते। क्योंकि इससे उनका वैयक्तिक लाभ नहीं होता, इसलिये वो इसे समझ नहीं सकते। उनकी अज्ञानता और समझ की कमी बौद्धिक दोष नहीं है, लेकिन बुरी विकृति की अभिव्यक्ति है।

उपयोग:
गरीबों के लिये कुछ करने की योजना बनाओ।

दिन 12: धर्मियों की इच्छा पूरी होती है।

"दुष्ट जन जिस विपत्ती से डरता है, वह उस पर आ पड़ता है, परन्तु धर्मियों की लालसा पूरी होती है।" ***नीतिवचन*** **10:24**

दुष्ट स्त्री या पुरूष यह जानते हैं कि सब कुछ सही नहीं है, और उनको भी एक दिन हिसाब देना पड़ेगा। इसलिये वो डर में जीते हैं और एक दिन ये डर उनपर आ पड़ेगा।

एक धर्मी स्त्री या पुरूष को भी इस बात का ऐहसास रहता है कि क्या होने वाला है, परन्तु वह सही रूप से आशावाद और आशा से भरा होता है। उनकी आत्मिक इच्छाएं पूरी होंगी। धर्मियों की लालसा तो केवल भलाई की होती है; परन्तु दुष्टों की आशा का फल क्रोध ही होता है।(नीतिवचन 11:23)।

उपयोग:
अपनी इच्छाओं की सूचि बनाओ और उनके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करो।

दिन 13: धर्मी लोग बेईमान से घृणा करते हैं।

"धर्मी लोग कुटिल मनुष्य से घृणा करते हैं, और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेवाले से घृणा करता है।" नीतिवचन **29:27**

यदि हम बेईमान से घृणा न करें तो हम धर्मी नहीं हैं। हम धर्मी हैं इसलिये यदि लोग हमसे घृणा करते हैं, तो वो जो हमसे घृणा करते हैं धर्मी नहीं हैं।

धर्मी दुष्ट से घृणा करता है, क्योंकि वे दुष्ट की गन्दी आत्मा और गन्दे कामों को पसन्द नहीं करते; उनकी घृणा दुष्ट लोगों और उनके दुष्ट कामों से है। परन्तु दुष्ट धर्मी के अच्छे कामों के कारण उससे घृणा करता है; उनकी घृणा अच्छे लोग और उनके अच्छे कामों से है।

जैसे कि वैद्य बिमारी से घृणा और मरीज़ से प्रेम करता है, और उसे चंगा करने की पूरी कोशिश करता है – वैसे ही वह भी दुष्टता से घृणा, पूरी तरह से घृणा करता है।

उपयोग:
ऐक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचो जो गलत कर रहा है। समय निकालकर उसे उसकी अधार्मिकता से बाहर निकलने में मदद करो।

दिन 14: धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।

"भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुंह की बात से बिगाड़ता है, परन्तु धर्मी लोग ज्ञान के द्वारा बचते हैं।"
***नीतिवचन* 11:9**

पाखंण्डी की एक पहचान यह है कि वह अपनी बातों से लोगों का विनाश करते हैं। ईमानदार प्रेम दूसरों के उन्नति की सोचता है, न कि उनके विनाश की।

बुद्धि और परमेश्वर के साथ वैयक्तिक रिश्ते, दोनों में धर्मियों के ज्ञान के कारण ही परमेश्वर उन्हें बचाते हैं।

यदि कोई अपने आपको भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे तो वह हृदय को धोखा देता है। उसकी भक्ति व्यर्थ है।(याकूब 1:26)।

उपयोग:
यदि हाल ही में आपने किसी को अपनी बातों से चोट पहुंचाई है, तो जाकर उसके साथ मेल–मिलाप करो।

दिन 15: धर्मी पेट भर खाने पाता है।

"धर्मी पेट भर खाने पाता है, परन्तु दुष्ट भूखे ही रहते हैं।"
***नीतिवचन* 13:25**

धर्मी को जीवित रहने के लिये पर्याप्त योग्यता प्रदान की जाती है; और उसके पास जो कुछ है उसी में वह संतुष्ट रहता और सावधानी से उसका उपयोग करता है; उसके पास खाने के लिये भरपूर होता है, और उसे जो भाग मिला है उससे संतुष्ट रहता है, और ज़रूरत से ज्यादा नहीं खाता; अपनी भूख मिटाने के लिये वह खाता है; वह हद्द से ज्यादा और विलासिता में नहीं जीता।

परन्तु दुष्ट का पेट कभी नहीं भरता; केवल आत्मिक भोजन से ही नहीं, जिसकी भूख उसे कभी नहीं लगती, लेकिन शारीरिक भोजन; भरपूरी में भी वह भूखा रहेगा, उस भोजन को खाकर अपना पेट भरने का उसका मन नहीं करता।

उपयोग:
आपको जिस भोजन के द्वारा परमेश्वर ने आशिष दिया है जिसे खाकर आप अपना पेट भरते हो, उसके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

दिन 16: धर्मियों की जड़ें हरी–भरी रहती है।

"दुष्ट जन बुरे लोगों के जाल की अभिलाषा करते हैं, परन्तु धर्मियों की जड़ हरी-भरी रहती है।"
***नीतिवचन* 12:12**

दूसरों के पास जो है उसे पाने की लालच रखना दुष्टों के स्वभाव में ही होता है, फिर वो चाहे दुष्टों की लूट ही क्यों न हो। दुष्ट लोगों ने जो हासिल किया है उसे पाने की लम्बी चाह और लालच ही उन्हें पाप में गिराता है।

परमेश्वर के धर्मी जनों को दुष्टों की लूट पर कोई लालच नहीं करना चाहिये, क्योंकि वे फल देने वाले वृक्ष के समान हैं। जैसा उनका जड़ है वैसा ही फल वो देते हैं।

उनके दिनों में धर्मी फूले–फलेंगे, और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा, तब तक शान्ति बहुत रहेगी।(भजन संहिता 72:7)

उपयोग:
अपनी आशिषों को किसी के साथ बांटो/और किसी को कुछ उपहार दो।

दिन 17: धर्मी उदारता से देता है।

"दुष्ट श्रृण लेता है, और भरता नहीं;
परन्तु धर्मी अनुग्रह से दान देता है।" ***भजन संहिता*** **37:21**

दुष्ट लोग सिर्फ उधार लेते हैं, उधार लेते पर चुकाते नहीं। उधार न चुकाने एक कारण होता है कि वो चुकाना नहीं चाहते लेकिन मुख्य कारण है कि वो चुका नहीं पाते। ज़रूरत बर्बादी लाती है, और श्रृण नहीं चुकता। अधिकांश समय दुष्ट लोग इस जीवन में इसी कारण से गरीब रह जाते हैं।

धर्मी लोग देने का स्वभाव रखते हैं, दया से भरे होते हैं। वह उदार और समृद्ध होता है। वो उधार लेता नहीं, परन्तु देता है। जहां तक एक अच्छे इंसान का प्रश्न है, वो दूसरों की ज़रूरतों को ध्यान से सुनता है, और जो कुछ भी वो अपने पास से देता है उससे गरीब होने की बजाए वो और भी धनी बनता जाता है, और पहले से और भी अधिक करने की क्षमता पाता है।

उपयोग:
आपने जो भी लिया और जो भी आपको वापस चुकाना है; उसे जल्द से जल्द चुकाओ।

दिन 18: धर्मी थोड़ा सा माल उत्तम है।

"धर्मी का थोड़ा-सा माल दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।"
भजन संहिता **37:16**

क्योंकि जो कुछ दुष्ट के पास है हमेशा के लिये नहीं रह पाएगा, तो धर्मी के पास जो थोड़ा है वह दुष्ट की बहुतायत से उत्तम है। एक जीवन जो परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाला धार्मिक जीवन, लम्बे समय का एक उत्तम निवेष है।

परमेश्वर का आशिष एक छोटे सिक्के को बड़ी दौलत में बदल सकता है, लेकिन उनका श्राप बड़ी दौलत को एक छोटे सिक्के में बदल सकता है। एक मनुष्य की खुशी उसके पास रखे सोने के ढेर से नहीं होती।

उपयोग:
अपनी सभी आशिषों को याद करों और परमेश्वर का आभार प्रकट करो।

दिन 19: धर्मी झूठी बातों से बैर रखता है।

"धर्मी झूठे वचनों से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है।" नीतिवचन **13:5**

धर्मी स्त्री या पुरूष केवल सच्चाई से प्रेम और झूठ से बचते नहीं; परन्तु वास्तव में वो झूठ से नफरत करते हैं। जैसे परमेश्वर सच से प्रेम और झूठ से नफरत करते हैं, धर्मी होने के नाते वो भी कुछ हद्द तक सच से प्रेम और झूठ से बैर रखते हैं।

दुष्ट स्त्री और पुरूष झूठ से प्रेम करते हैं, और इसके कारण वो शर्मिन्दगी और अपमान सहते हैं। दुष्ट लोग घृणित और घिनौने, तथा वे अति भ्रष्ट सिद्धान्त और अति भ्रष्ट चाल–चलनवाले होते हैं।

उपयोग:
यदि हमने हाल ही में झूठ बोला है तो उसे सुधारें।

दिन 20: धर्मी का मुंह जीवन का सोता है।

"धर्मी का मुंह तो जीवन का सोता है, परन्तु उपद्रव दुष्टों के मुंह पर छाया रहता है।" नीतिवचन **10:11**

एक धर्मी स्त्री या पुरूष जीवनदायी शब्द बोलते हैं, अधिकांश समय दूसरों के लिये और कभी–कभार खुद के लिये। बहता झरना विशेष रूप से बहुत कीमती होता है और लोग उसके आस–पास जमा होते हैं। इसी तरह से धर्मी के मुख से खुले और परोपकारी शब्द एक समुदाय के सभी लोगों को भरपूर सामयिक, बौद्धिक, नैतिक और आत्मिक जीवन देने के लिये उतना ही ज़रूरी है।

दुष्ट स्त्री–पुरूष अपने शब्दों से हानि और चोट पहुंचाते हैं। वो जीवन छीन लेते हैं।

उपयोग:
आज जिससे भी आप मिलोगे तो पूरी कोशिश करो कि उनसे आप सकारात्मक बातें ही बोलोगे। उनके साथ प्रोत्साहन भरे शब्दों से बात करो।

दिन 21: धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है।

"धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।" नीतिवचन **12:10**

परमेश्वर पशुओं का ध्यान रखते हैं। धर्मी व्यक्ति भी अपने पशु का ध्यान रखेगा और उस पर दया दिखाएगा। एक सच्ची भावना है जिसमें पशु उसका है, और परमेश्वर उस पशु पर उसे अधिकार देता है; लेकिन उसे उस अधिकार को ध्यानपूर्वक और दया से निभाना है।

वचन सिखाता है कि एक भला मनुष्य उसका ध्यान रखता है जो उसकी ज़रूरतों को पूरा करता है, चाहे फिर वो जानवर ही क्यों न हों। दुष्ट केवल शोषण करता है।

उपयोग:
यदि आपके पास कोई पालतू जानवर है तो उस पर अधिक से अधिक दया दिखाएं। यदि आपके पास पालतू जानवर नहीं है तो जिस जानवर को आप रोज़ देखते हैं उनको खाना खिलाओ।

दिन 22: धर्मी आनन्दित रहता और जयजयकार करता है।

"बुरे मनुष्य का अपराध फन्दा होता है, परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जयजयकार करता है।" नीतिवचन **29:6**

एक व्यक्ति का चरित्र बुरा हो सकता है, लेकिन उसके पाप के मूल काम उसका विनाश करते हैं। अधिकतर दुष्ट लोग ये समझते हैं कि उनके पाप के द्वारा वो अपनी जीवन और स्वतंत्रता का आनन्द उठा रहे हैं, लेकिन यह उनके लिये एक जाल और एक फन्दा साबित होगा।

यदि पाप पर दुष्टों का हक्क है, तो आनन्दित रहना और जयजयकार करने पर धर्मी का। जयजयकार करना और आनन्दित रहना उनके भीतर जो है उसे व्यक्त करने की एक भावना है, ठीक उसी तरह जैसे दुष्ट व्यक्ति के भीतर जो बुराईयां है वह उसके पापों से व्यक्त होती हैं।

उपयोग:
ऊंची आवाज़ में परमेश्वर के गीत गाओ और उनका जयजयकार करो।

दिन 23: जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं।

"जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं, परन्तु जब दुष्ट नाश होते, तब जयजयकार होता है।"
***नीतिवचन* 11:10**

परमेश्वर अपने धर्मी जनों के द्वारा लोगों पर अपनी कृपा करता है, और फिर जब उस समुदाय को आशिषें मिलती हैं, तो वे आनन्दित होते हैं। जब इस तरह के लोगों को प्रोत्साहन मिलता और ऊंचे तथा भरोसेमन्द ओहदों पर नियुक्ति की जाती है, तो शहर आनन्दित होता है; नागरिक या उस सरकार के लोग आनन्द मनाते हैं, क्योंकि वे अपने सार्वजनिक मामलों के प्रशासन पर पूरे आत्मविश्वास से न्याय, शान्ति और अन्य कई सुविधाओं की उम्मीद रखते हैं।

जब दुष्ट का नाश होता है तो आनन्द मनाया जाता है: धर्मी के आशिषों के कारण समुदाय जितना आनन्द मनाता है, उसी तरह वो आपत्ति और दुष्ट के अन्त का आनन्द भी मनाता है। दुष्ट स्त्री–पुरूषों का जब अन्त होता है तो उनकी कमी किसी को नहीं खलती।

जब धर्मी लोग जयवन्त होते हैं, तब बड़ी शोभा होती है, परन्तु जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं, तब मनुष्य अपने आपको छिपाता है।
(नीतिवचन 28:12)

जब धर्मी लोग शिरोमणी होते हैं, तब प्रजा आनन्दित होती है; परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब प्रजा हाय–हाय करती है।(नीतिवचन 29:2)

उपयोग:
जिन्होंने बचपन से आपको धार्मिक रहने में मदद किया है, उन सभी के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो। मुमकिन हो तो उन्हें एक धन्यवाद पत्र भेजो।

दिन 24: धर्मी सदा स्थिर रहता है।

"दुष्ट जन उस बवण्डर के समान है, जो गुजरते ही लोप हो जाता है, परन्तु धर्मी सदा स्थिर रहता है।" नीतिवचन **10:25**

यह वचन उस अस्थिर और भयानक जगह पर ज़ोर डालता है, जहां दुष्ट खड़े रहते हैं। मुसिबत(तूफ़ान) हर किसी पर आते हैं, लेकिन जब वो आते हैं तो दुष्ट के पास खड़ा रहने के लिये कोई मजबूत नींव नहीं होती। जैसे प्रचंड तूफान अपने सामने आनेवाली हर एक चीज़ को बहा ले जाता है; इसी तरह परमेश्वर का क्रोध दुष्ट को बहा ले जाएगा; उनके पास न कोई जड़ और न ही कोई डाली बच पाएगी।

जिस तरह से बुद्धिमान व्यक्ति का घर चट्टान पर बनाने का उदाहरण (मत्ती 7:24-27) में है, धर्मी मनुष्य के पास भी एक मजबूत, अनन्तकाल की नींव है जो हर तूफ़ान का सामना कर सकता है।

उपयोग:
आपके जीवन में आनेवाले हर एक तूफ़ान का सामना करने के लिये परमेश्वर से अपने लिये बुद्धि मांगो।

दिन 25: धर्मियों का घर स्थिर रहता है।

"जब दुष्ट लोग उलटे जाते हैं तो वो रहते ही नहीं,
परन्तु धर्मियों का घर स्थिर रहता है।" ***नीतिवचन*** **12:7**

धार्मिकता में कोई जड़ न पकड़ने के कारण दुष्ट ना खड़ा रह सकता है और न रह पाएगा। एक दिन वे मिटा दिये जाएंगे और नष्ट हो जाएंगे।

परमेश्वर अपने धर्मी स्त्री–पुरूषों को सुरक्षित रखेगा। जो तूफान दुष्ट के घरों का नाश कर देगा उसके विनाशकारी थपेड़ों में धर्मी मनुष्य और उसका घर टिका रहेगा।

उपयोग:
एक परीवार होने के नाते और अधिक धार्मिक होने के बारे में चर्चा करो और एक साथ मिलकर प्रार्थना करो।

दिन 26: धर्मियों की ज्योति प्रकाशमान होकर चमकती है।

"धर्मियों की ज्योति आनन्द के साथ रहता है,
परन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाता है।" नीतिवचन **13:9**

धार्मिकता – जिसे वास्तविक जीवन में ईश्वरभक्ति के रूप में जाना जाता है – उसका सम्बन्ध प्रकाश और आनन्दित रहने से है। जो व्यक्ति धार्मिक होने का दावा करता है, लेकिन उसके जीवन में प्रकाश और आनन्द बड़ी मुश्किल से दिखाई देते हैं, तो उस व्यक्ति में कुछ गड़बड़ी है।

धार्मिकता का सम्बन्ध प्रकाश के साथ जुड़ा है, लेकिन दुष्ट का अन्धकार के साथ। जिस अन्धकार की यहां बात हो रही है वो ऐसा अन्धकार है जो एक धर्मी परमेश्वर के न्याय के द्वारा लादा गया है (जो बुझा दिया जाएगा)।

उपयोग:
मत्ती अध्याय 6 पढ़ो और धर्मी के कामों पर मनन करो।

दिन 27: धर्मियों का वंश बचाया जाएगा।

"मैं दृढ़ता के साथ कहता हूं, बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा, परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा।" ***नीतिवचन*** **11:21**

परमेश्वर का प्रतिरोध करने की ताकत व्यक्तिगत रूप से मनुष्य में नहीं है; सारे मनुष्य मिलकर भी इतने ताकतवर नहीं हैं कि परमेश्वर को रोक सकें। जब बाबेल नगर में मीनार बनाने के दिनों में (उत्पत्ति 11:1-9) सारे लोगों ने एकत्रित आकर परमेश्वर को रोकना चाहा, तब परमेश्वर ने उनका न्याय किया।

परन्तु धर्मी का वंश बचाया जाएगा: परमेश्वर का आशिष उसके धर्मियों पर और उनके वंशजों पर बना रहेगा।

उपयोग:
समय निकालकर अपने आनेवाली पीढ़ी को धर्मी बनना सिखाओ।

दिन 28: धर्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूं।

"धर्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूं,
परन्तु दुष्टों के मुंह से बुरी बातें उबल आती हैं।" नीतिवचन **15:28**

परमेश्वर के धर्मी जन – बुद्धिमान स्त्री और पुरूष – बोलने से पहले सोचते हैं कि उन्हें क्या बोलना चाहिये और फिर बोलते हैं। उनके शब्द केवाल आवेग और प्रतिक्रियाओं पर आधारित नहीं होते।

जब दुष्ट के मुंह से शब्द निकलते हैं तो उनपर कोई काबू नहीं होता। बोलने से पहले बिना बुद्धिमानी से सोचे समझे बुरे शब्द और बुरी योजनाएं उनके मुंह से निकल पड़ती हैं।

सल्लाह है कि कम बोलें लेकिन अच्छा बोलें। जहां बहुत बातें होती हैं, वहां अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुंह को बन्द रखता वह बुद्धि से काम लेता है।(नीतिवचन 10:19)

उपयोग:
कुछ बोलने से पहले सोच समझकर बोलने का अभ्यास करो।

दिन 29: धर्मी प्रभु के मार्ग पर चलते हैं।

"जो बुद्धिमान हो, वही इन बातों को समझेगा, जो सीधे हैं, वही इन्हें बूझ सकेगा; क्योंकि प्रभु के मार्ग सीधे हैं, और धर्मी उनमें चलते रहेंगे, परन्तु अपराधी उनमें ठोकर खाकर गिरेंगे।" होशे **14:9**

यहां पर दो चुनाव हैं, या तो परमेश्वर के विरूध बलवा करो और ठोकर खाते रहो, या तो परमेश्वर के पास लौटो और उनके मार्गों पर सुरक्षितता में चलते रहो। पहला चुनाव मूर्खतापूर्ण है; और दूसरा चुनाव बुद्धिमानी का है।

बुद्धिमान व्यक्ति यह समझ पाएगा कि परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा पश्चाताप करने और फिर से उनके साथ जुड़ने का मौका देते हैं, और इस आमंत्रण को अनदेखा करना या ठुकराना भयानक और मूर्खतापूर्ण होगा।

प्रतिज्ञा किये हुए न्यायों के बीच भी बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति यह बूझ पाता है कि प्रभु के मार्ग सही हैं, और कभी की गई न्याय की वह घोषणा पश्चाताप करने का एक निमंत्रण है।

उपयोग:
क्या आप प्रभु के मार्गों में ठोकर खाते हैं? इसके लिये किसी से बात करो और सलाह लो।

दिन 30: धर्मी सुरक्षित हैं।

"प्रभु का नाम दृढ़ गढ़ है; धर्मी उस में भागकर सब दुर्घटनाओं से बचता है।" नीतिवचन **18:10**

परमेश्वर एक अद्भुत और मजबूत सुरक्षा प्रदान करता है। एक जादू या एक आकर्षण की तरह यह उनके नाम के जादुई कहावत में निहित नहीं है, परन्तु हमारे प्रभु परमेश्वर के नाम में उनके चरित्र और उनके व्यक्तिमत्व की घोषणा के रूप में है।

इस चारदिवारी में हमें कौन ऐसा है जिसे इस बात की चिन्ता करनी होगी कि सबसे तेज तीर हमें नुकसान पहुंचा सकता है? जैसे–जैसे हम अपने विश्वास पर निर्भर होकर काम करते जाते हैं, तो हमें बाहरी मुसीबतों से सुरक्षा का ऐहसास होता है। हम परमेश्वर के बदला लेनेवाले न्याय से, नियम के श्राप से, पाप से, सज़ा से और दूसरी मृत्यु से बचते हैं।

परमेश्वर सभी को उनके नाम में शरण लेने के लिये बुलाते हैं; जो भी परमेश्वर के नाम की दोहाई देता है वह बचाया जाएगा। वो जो दीनता से परमेश्वर की ओर दौड़ते हैं और उसमें शरण पाते हैं, वो धर्मी हैं, तो वो जो धर्मी हैं परमेश्वर की ओर दौड़ते हैं।

उपयोग:
अपनी प्रार्थना में उन समयों को याद करो जब आप भाग कर परमेश्वर के पास गए और उनमें शरण पाया।

दिन 31: अपने अनुग्रह द्वारा परमेश्वर धर्मी को घेरे रहेगा।

"क्योंकि तू धर्मी को आशिष देगा; हे प्रभु , तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा।" भजन संहिता **5:12**

परमेश्वर की कृपा – यह सबसे बड़ा आशिष है। यह जानना कि परमेश्वर हमें कृपा और आनन्द से देखता है, संसार में यह सबसे बड़ा ज्ञान है। अनुग्रह में यह हमारा स्थान है।

एक ढाल शरीर के किसी एक भाग को संरक्षण नहीं देता। वह बड़ा और पूरी तरह से हर तरफ घूमने सक्षम होता है जो शरीर के किसी भी एक भाग को तथा सभी भागों को ढांपता है। यह कवच के ऊपर कवच है। ठीक इसी तरह परमेश्वर के अनुग्रह में होना हमें पूरी तरह से सुरक्षित रखता है।

उपयोग:
धर्मी होने का एक दृढ़ निश्चय करो। परमेश्वर के अनुग्रह के लिये, उसके सामर्थपूण कामों के लिये, और हमारी समझ से परे उसकी महानता के लिये उसकी प्रशंसा करो।